

106463 - तरावीह की नमाज़ दो दो रकअत है

प्रश्न

कुछ इमाम तरावीह की नमाज़ में चार रकअतें या उस से अधिक एक ही सलाम में एकत्रित कर देते हैं, दो रकअतों के बीच नहीं बैठते हैं, और यह दावा करते हैं कि यह सुन्नत का काम है। तो क्या इस काम का हमारी पवित्र शरीअत में कोई आधार (असल) है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

“ यह काम धर्म संगत नहीं है, बल्कि मकूह (घृणित) या अधिकांश अहले इल्म के निकट हराम (निषिद्ध) है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : “रात की नमाज़ दो दो रकअत है।” इसकी प्रामाणिकता पर इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस से बुखारी व मुस्लिम की सहमति है। तथा इसलिए कि आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से साबित है कि उन्होंने कहा : “ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को ग्यारह रक़अत नमाज़ पढ़ते थे, प्रति दो रक़अत से सलाम फेरत थे, और एक रक़अत वित्र पढ़ते थे।” इस हदीस की प्रामाणिकता पर बुखारी व मुस्लिम की सहमति है और इस अर्थ की हदीसें बहुत हैं।

जहाँ तक आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की इस सुप्रसिद्ध हदीस का संबंध है कि : “नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को चार रक़अत नमाज़ पढ़ते थे, तो आप उनकी खूबसूरती और लंबाई के बारे में मत पूछिए, फिर आप चार रकअत नमाज़ पढ़ते थे, तो आप उनकी सुंदरता और लंबाई के बारे में मत पूछिए।” (इस हदीस की प्रामाणिकता पर बुखारी व मुस्लिम की सहमति है), तो इसका मतलब यह है कि : आप प्रति दो रकअत से सलाम फेरते थे, उसका मतलब यह नहीं है कि आप चार रक़अतों को एक ही साथ एक सलाम के साथ पढ़ते थे, जैसाकि आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पिछली हदीस में है, और इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आप का यह फरमान साबित है कि : “ रात की नमाज़ दो दो रकअत है।”, जैसाकि पीछे गुज़र चुका, और हदीसें एक दूसरे की पुष्टि और समर्थन करती हैं, अतः मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह सभी हदीसों पर अमल करे, और मुजमल हदीसों की व्याख्या स्पष्ट हदीसों से करे। और अल्लाह तआला ही तौफीक प्रदान करने वाला है।” (समाप्त हुआ)।

फ़ज़ीلतुश्शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ रहिमहुल्लाह।